International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 28-29

समाजवादी एंव यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवनदर्शन

डॉ० दिलीप कुमार झा
पीएच. डी, बी. एड, नेट, बेट, सलेट परीक्षा उत्तीर्ण, स्नानकोत्तर हिन्दी शिक्षक फोर्टगलास्टर गवर्नमेंटस्पोन्सर्ड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राधानगर, हावडा प. बंगाल, भारत।

सारांश
प्रेमचंदोत्तोर युग में हिन्दी – उपन्यास को उत्कर्ष प्रदान करने में दो प्रवृतियों – मनोविश्लेषणात्मक यथार्थवाद तथा सामाजिक यथार्थवाद का विशेष योगदान रहा। सामाजिक यथार्थवाद का अंकुर गोदान में दिखलाई पड़ता है। बाद में वह विकसित हुआ। एक वर्ग महात्मा गाँधी, नेहरू एंव अरविन्द आदि से प्रेरणा ग्रहण करके सामाजिक तथा समष्टि जीवन के यथार्थ को अपने उपन्यासों में प्रकट कर रहा था। यह वर्ग भी सामाजिक बुराइयों को दूर करने तथा समाजवाद लाने का प्रयत्न कर रहा था, किन्तु शांति के द्वारा। दूसरा वर्ग, मार्क्स से प्रेरणा ग्रहण करके सामाजिक यथार्थ को प्रकट कर रहा था तथा रक्तक्रांति के द्वारा समाजवाद लाने का उद्घोष कर रहा था। इसलिए हिन्दी–उपन्यास–साहित्य में मार्क्सवादी सामाजिक उपन्यास (समाजवादी उपन्यास) एंव यथार्थपरक सामाजिक उपन्यास की परंपरा चली, जो स्वभाविक थी।

मूल शब्द : प्रेमचंदोत्तोर युग, समाजवादी एंव यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासों।

प्रस्तावना
जीवनदर्शन क्या है! "जीवन दर्शन से अभिप्राय है, 'जीवन संबंधी दृष्टिकोण' इस अर्थ में जीवनदर्शन या कलाकार का जीवन एक विशिष्ट सत्य की ओर संकेत करता है। वह सत्य है कलाकार ने जीवन को कैसा पाया, उसके संबंध में क्या धारणा बनाई और और जीवन को कैसा समझता है। संक्षेप में, जीवनदर्शन कलाकार के जीवन की आलोचना है।"[1]

समाजवादी उपन्यास (मार्क्सवादी सामाजिक उपन्यास) में अभिव्यक्त जीवनदर्शन
"साम्यवाद शब्द अंग्रेजी के 'कम्युनिज्म' का पर्याय है, जो लैटिन के 'कम्युनिस' से व्युत्पन्न है और सन् 1834–1839 ई० में पेरिस के गुप्त, क्रांतिकारी संगठनों द्वारा गढ़ा गया था।"[2] कार्लमार्क्स एंव एंगल्स ने इस शब्द का बहुत प्रयोग किया। बाद में उसकी विचारधारा के लिए यह शब्द रूढ़ हों गया। मार्क्स का दर्शन 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। मार्क्स ने कहा कि "विचार जगत् का इतिहास यही सिद्ध करता है। कि समस्त बौद्धिक विकास भौतिक परिस्थितियों के साथ ही परिवर्तित होता रहा है।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि साहित्य का आधार भी आर्थिक है। मार्क्स ने कहा कि समाज का इतिहास वर्ग–संघर्ष का इतिहास है। केवल दो वर्ग है– एक सर्वहारा वर्ग, दूसरा शोषक वर्ग। इसी सर्वहारा वर्ग के समर्थन में साहित्य लिखने की प्रेरणा उन्होने दी थी।

मार्क्सवादी सामाजिक उपन्यासों (समाजवादी उपन्यासों) में वर्ग संघर्ष, जनवादी मूल्यों, रूढ़ियों के विरोध का चित्रण मिलता है तथा साम्यवादी मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न। साम्यवादी समाजिक उपन्यासकारों में प्रमुख है–यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, भीष्म साहनी इत्यादि।

यशपाल कर्मठ साहित्यकार एंव विवकेशील विचारक है। साहित्य के माध्यम से उन्होने वैचारिक क्रांति की भूमिका तैयार की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि "यदि जीवन संघर्ष है और कला जीवन की अभिव्यक्ति है तो कला संघर्ष की द्योतक हुए बिना नही रह सकती।"[4]

यशपाल ने जिस प्रकार राजनितिक क्षेत्र में मार्क्सवादी दर्शन को अपनाया है, उसी प्रकार सामाजिक क्षेत्र में भी मार्क्सवादी दर्शन को रूपांयित किया है। मार्क्स के अनुसार, "मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक चेतना से भिन्न उसका कोई अस्तित्व नही। सामाजिक चंतना व्यक्ति के विचारों, सिद्धांतों और दर्शन का ही समूह मात्र है।"[5]

यशपाल ने भी इसी धारणा को स्वीकार किया। यशपाल ने लिखा है "उपन्यास लिखने से मेरा अभिप्राय यह स्पष्ट करना है कि मनुष्य परंपरागत विचारधाराओं का दास नही है, बल्कि वह अपना विचारधारा का स्रष्टा है।"[6] यशपाल के उपन्यास इनके जीवनदर्शन के साक्षी है।

यशपाल तथा उनके सामाजिक उपन्यासकार राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, आदि राजनितिक तथा सामाजिक समस्याओं का चित्रण मार्क्सवादी दृष्टिकोण से करते है।

यशपाल ने जिन राजनितिक उपन्यासों की रचना की है, वे निम्नलिखित है–

'दादा कामरेड' (1941), 'देशद्रोही', (1943), 'पार्टी कामरेड' (1947), 'झुठा सच' (1958)

"यशपाल के प्रायः सभी उपन्यास किसी न किसी बिन्दु पर आजादी के संघर्ष का चित्रण करते अवश्य है किन्तु अंततः उनका कथ्य, साम्यवाद से ही जुड़ जाता है। क्रांतिकारी होते हुए भी यशपाल न क्रांतिकारियों के सशस्त्र आंदोलन से संतुष्ट है न गाँधी के अहिंसा, असहयोग आदि के मार्ग से ही। वे तो वैचारिक क्रांति और जनादोंलन के समर्थक है और उनके उपन्यासों में आजादी के संघर्ष का मूल कथ्य भी यही है।"[7]

राहुल सांकृत्यायन का चिंतन उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त हुआ है। काश्तकारी से जमींदारी, जमींदारी से महंथी, महंथी से कांग्रेस, कांग्रेस से किसान – आंदोलन और किसान – आंदोलन से साम्यवाद – राहुल जी के सामाजिक चिंतन का क्रम है।

सारांश यह है कि साम्यवादी सामाजिक (समाजवादी) उपन्यासकारों में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव प्रमुख है। इनके उपन्यासों में वर्ग संघर्ष, जनवादी मूल्यों, रूढ़ियों के विरोध का चित्रण है तथा साम्यवादी मूल्यों, की स्थापना की गई है। मार्क्सवादी समाजवादी उपन्यासकारों ने हिन्दीसाहित्य को कुछ बड़े सशक्त उपन्यास दिए, जनता के स्वर को इन्होंने सबसे ऊपर रखा।
यथार्थपरक सामाजिक उपन्यास में अभिव्यक्त जीवनदर्शन
यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासकार की दृष्टि व्यक्तिवादी या स्वच्छदतावादी होती है किन्तु उसका उद्देश्य अपने ढंग से समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करना होता है। समाज और व्यक्ति एक–दूसरे के पूरक है।
"सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन का चित्रण रहता है किन्तु उसे देखने की लेखक की कोई निर्दिष्ट दृष्टि नही रहती। यानि दृष्टि होती है, किन्तु यह किसी प्रकार की हो सकती है– लेखक की अपनी भी हो सकती है और किसी संस्था की भी। किन्तु समाजवादी उपन्यासों (साम्यवादी सामाजिक उपन्यासों) की एक निर्दिष्ट दृष्टि होती है, वह लेखक की अपनी निजी दृष्टि नही हो सकती,वह मार्क्सवादी होती है।"[8] यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासकारों में भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रतापनारायण श्रीवास्तव,भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क प्रभृति मुख्य है।
"भगवतीचरण वर्मा की दृष्टि व्यक्तिवादी है। ये जीवन तथा समाज के यथार्थ को अपनी दृष्टि से देखते है, अपनी बुद्धि से उसका विवेचन करते है।"[9]
भगवतीचरण वर्मा का सवहिंनचावत राम गोसाई भाग्यवादी शीर्षक वाला यथार्थवादी उपन्यास है। यह वर्मा जी के भाग्यवादी दृष्टिकोण का नवीन रूप है– "सवहिं नचावत राय गोसाई तो यह सब चरित्र राम गोसाई के इंगित पर नाच रहे है।" 10
'टेढ़े मेढ़े रास्ते में' वर्मा जी गाँधीवादी दर्शन से प्रभावित है।
उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवादी दर्शन की झाँकी दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्ष

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों की लंबी परंपरा है, जिन्होने सामाजिक जीवन के यथार्थ को लक्ष्य बनाकर उपन्यास लिखै प्रेमचंद का जीवनदर्शन आदर्शोन्मुख यथार्थवाद था किन्तु प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों का यथार्थवाद सीमित दृष्टि में नही है।सामाजिक जीवन व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाता और बिगाड़ता है। यथार्थवादी लेखक सामाजिक समस्याओं का चित्रण करता है। वह सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक वैषम्य, नैतिक विस्वासों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। जीवन को उसके पूर्ण परिवेश में उसकी सभी सुंदरताओं और कुरूपताओं के साथ पकड़ने की गहरी दृष्टि ही यथार्थवादी दृष्टि है। यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासकार की दृष्टि व्यक्तिवादी या स्वच्छंदतावादी होती है किन्तु उसका उद्देश्य अपने ढंग से समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करना होता है।
यथार्थपरक सामाजिक उपन्यासकारों ने समाज का यथार्थ चित्र खींचा है। इनके उपन्यासों में आशा– निराशा, घुटन, आकांक्षा, संत्रास सशक्त रूप में प्रकट हुए है। ये उपन्यास वास्तव में यथार्थवादी है। इन उपन्यासों में मार्क्सवाद का स्वर प्रधान न भी रहा हो किन्तु उसका प्रभाव निश्चय ही अन्तर्निहित है। उसके प्रभाव के कारण ही निर्भय भाव से सामाजिक विसंगतियों को उद्घटित किया गया। धर्मवीर भारती का ष्सूरज का साँतवा घोड़ाष् भगवतीचरण वर्मा का ष्भूले विखरे चित्रष् आदि उपन्यास सामाजिक माने जाते है किन्तु मार्क्सवादी अन्तर्दष्टि उनमें व्याप्त है।

संदर्भ

1. 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और शिल्पविधि'– डॉ आर्दश सक्सेना, पृ० 233–34.
2. 'हिन्दी साहित्य–कोश', भाग–2 सं० डॉ धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल, वाराणसी संवतः 2020, पृ० 843.
3. 'सलेक्टेड वर्क्स भाग–1', कार्ल मार्क्स एंड फेडरिक एंगिल्स,पृ० 52.
4. 'बात–बात में बात'–यशपाल, विप्लव कार्यालय लखनऊ, पृ० 28.
5. 'मार्किसस्ट फिलासकी वी अफानाशेव' पृ० 353.
6. 'देखा, सोचा, समझा', यशपाल, भारतीय साहित्य–संग्रह, पृ० 101.
7. 'वीणा', इंदौर, दिसंबर, 1998, पृ० 17.
8. 'हिन्दी उपन्यासः एक अर्न्तयात्रा'–डॉ० रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्दी, तीसरा परिवर्द्धित संस्करण, 2001, पृ० 127.
9. 'हिन्दी गद्य का आलोचनात्मक इतिहास'– डॉ० श्रीधर मिश्र, किताब महल, धार्नहिल रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1984, पृ० 206.
10. 'सवहिं नचावत राम गोसाई'– भगवती चरण वर्मा, 1970 (प्रथम संस्करण) पृ० 284.